पाठ 10

तुद्-गण और चुर्-गण की धातुएँ, धातुओं का अ-वर्ग, स्वर संधि के कुछ नियम, एक वार्तालाप और श्लोक

10.1 तुद-गण की धातुएँ—धातुओं के छठे गण का नाम **तुद्** (दुःख देना) धातु पर **तुदादिगण (तुद्-गण)** रखा गया है। इस गण की धातुओं के रूप लट् लकार में **भू-गण** की धातुओं की तरह ही बनते हैं। अंतर केवल इतना है कि इनके अंग बनाते समय **भू-गण** की धातुओं की तरह इस गण की धातुओं के स्वर को गुण नहीं होता।

लिख् (लिखना) धातु **तुद्** गण की है। इसके लट् लकार के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**लिखति**	**लिखतः**	**लिखन्ति**
मध्यम पुरुष	**लिखसि**	**लिखथः**	**लिखथ**
उत्तम पुरुष	**लिखामि**	**लिखावः**	**लिखामः**

तुद्-गण की धातुएँ नीचे दी गई हैं। अनियमित धातुएँ तारांकित है।

मिल्	मिलना	(मिलति)	***प्रच्छ्**	पूछना	(पृच्छति)
विश्	प्रवेश करना	(विशति)	***इष्**	इच्छा करना	(इच्छति)
स्पृश्	छूना	(स्पृशति)	***कृत्**	काटना	(कृन्तति)
सृज्	सृजन करना	(सृजति)	***मुच्**	छोड़ना	(मुञ्चति)
क्षिप्	फेंकना	(क्षिपति)	***सिच्**	सींचना	(सिञ्चति)

टिप्पणी:—**विश् धातु** का प्रयोग प्रायः **प्र** उपसर्ग के साथ होता है और इसका अर्थ है प्रवेश करना। **विश्** का प्रयोग जब **उप** उपसर्ग के साथ होता है तो इसका अर्थ **बैठना** होता है, जैसे—

सः वाटिकां प्रविशति—वह बाग में प्रवेश करता है।

ते तत्र उपविशन्ति—वे वहाँ बैठते हैं।

10.2 अ. निम्नलिखित वाक्यों को बोलकर पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. सः बालकः हस्तेन कन्दुकं[1] क्षिपति। 2. ताः बालिकाः पादपान्[2] जलेन सि4चन्ति। 3. कक्षायां छात्रः प्रश्नान् पृच्छन्ति। 4. वयमद्य तेभ्यः पत्रणि लिखामः। 5. किं यूयमपि पत्रणि लिखथ? 6. न, वयं पत्रणि न लिखामः, पुस्तकं पठामः। 7. त्वं किम् इच्छसि? 8. अहं सुखम् इच्छामि, दुःखम् न इच्छामि। 9. संसारस्य जनाः सुखमेव इच्छन्ति, दुःखं न इच्छन्ति। 10. ईश्वरः एनं संसारं सृजति।

(**शब्दार्थ**:—1. गेंद, 2. पौधों को पादपः- पौधा)

10.3 क्रि. चुर्-गण की धातुएँ- दसवें गण की मुख्य धातु चुर् है इसलिए इसे चुरादिगण (चुर्-गण) कहते हैं। इस गण की यह विशेषता है कि मूल धातु से अंग बनाने के लिए धातु के साथ अय् जोड़ा जाता है। इस प्रकार कथ् (कहना) का अंग कथय और गण् (गिनना, समझना) का अंग गणय है। कुछ धातुओं के स्वरों में भी कुछ परिवर्तन होते हैं। चुर् धातु के रूप नीचे दिए गए हैं:

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	**चोरयति**	**चोरयतः**	**चोरयन्ति**
मध्यम पुरुष	**चोरयसि**	**चोरयथः**	**चोरयथ**
उत्तम पुरुष	**चोरयामि**	**चोरयावः**	**चोरयामः**

चुर्-गण की कुछ धातुएँ नीचे दी गई हैं।

कथ्	कहना	(कथयति)	**पूज्**	पूजा करना	(पूजयति)
चिन्त्	सोचना	(चिन्तयति)	**भक्ष्**	खाना	(भक्षयति)
चुर्	चुराना	(चोरयति)	**भूष्**	सजाना	(भूषयति)
दण्ड्	सज़ा देना	(दण्डयति)	**मंत्र्**	सलाह करना	(मंत्रयति)
गण्	गिनना	(गणयति)	**रच्**	बनाना	(रचयति)
पाल्	पालन करना	(पालयति)	**क्षल्**	धोना	(क्षालयति)

10.4 प. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनका हिन्दी में अनुवाद कीजिए:

1. जनाः मन्दिरे पुष्पैः देवान् पूजयन्ति। 2. छात्रः अध्यापकस्य आज्ञां पालयन्ति। 3. वयं मधुराणि फलानि भक्षयामः। 4. सा मलिनानि वस्त्राणि क्षालयति। 5. चौराः आभूषणानि चोरयन्ति। 6. शासकाः तान् सर्वान् दण्डयन्ति। 7. त्वं किं चिन्तयसि? 8. अहं देशस्य दशां चिन्तयामि। 9. ते नगरस्य जनान् गणयन्ति। 10. पण्डितः रामायणस्य मनोहरां कथां कथयति। 11. बालिकाः पुष्पैः स्वकेशान् भूषयन्ति। 12. ताः एतैः पुष्पैः मालां रचयन्ति।

10.5 अ. वर्ग की धातुएँ. भू, दिव्, तुद् और **चुर्** गण की धातुओं में एक बात समान है उन सभी के अंग के अंत में **अ** आता है जिसके साथ अन्त्य प्रत्यय जोड़कर धातुओं के विभिन्न रूप बनाए जाते हैं। इसलिए हम इन चार गणों की धातुओं को **अ**-वर्ग की और शेष गणों की धातुओं को **अ**-भिन्न वर्ग की धातुएँ कह सकते हैं। एक बार अंग बन जाने के बाद **अ**-वर्ग की सभी धातुओं के वर्तमान काल (लट् लकार) तथा कुछ अन्य कालों और वृत्तियों में रूप एक समान बना सकते हें। इनके अंग बनाने के लिए धातुओं के स्वरों में परिवर्तन के कुछ विशेष नियमों के बारे में हम आगे पढ़ेंगे।

10.6 संधि स्वर संधि- अब हम स्वर संधि के दो और नियमों के बारे में पढेंग़े। यहाँ स्वर परिवर्तन के संबंध में दो तकनीकि शब्दों को जान लेना आवश्यक है। इन्हें गुण और वृद्धि कहते हैं। आगे सारणी में इन परिवर्तनों को प्रदर्शित किया गया है:

मूल स्वर	गुण रूप	वृध्दि रूप
अ, आ	**अ**	**आ**
इ, ई	**ए**	**ऐ**
उ, ऊ	**ओ**	**औ**
ऋ, ॠ	**अर्**	**आर्**
ऌ	**अल्**	**आल्**

इन स्वर परिवर्तनों को याद रखना इसलिए आवश्यक है कि जब कहीं **गुण** और **वृद्धि** से संबंधित स्वर परिवर्तनों का उल्लेख हो तो आप इन नियमों को समझ सकें और ठीक प्रकार से प्रयोग कर सकें। उदाहरणार्थ, यदि यह कहा जाए कि कुछ विशेष स्थितियों में **इ** और **ई** को गुण हो जाता है तो आपको यह मालूम हो कि इन दोनों स्वरों को **ए** हो जाता है और यदि यह कहा जाए कि **उ** और **ऊ** स्वरों को **वृद्धि** हो जाती है तो आप जानते हों कि ये **औ** में परिवर्तित हो जाते हैं। इस स्वर संधि के उदाहरण निम्नलिखित हैं

i) यदि **अ** या **आ** के बाद **इ, ई, उ, ऊ ऋ** या **ॠ** स्वर आएँ तो दोनों स्वर मिल जाते हैं और दोनों के स्थान पर बाद वाले स्वर का गुण रूप हो जाता है। गुण संधि के कुछ उदाहरण नीचे दिए हैं:

नर + ईश: = नरेश: **सूर्य + उदय: = सूर्योदय:**

न + इच्छन्ति = नेच्छन्ति **महा + ऋषि: = महर्षि:**

ii) जब **अ** या **आ** के एकदम बाद **ए, ऐ, ओ** या **औ** आते हैं तो दोनों स्वरों के स्थान पर बाद वाले स्वर का वृद्धि रूप हो जाता है। इस प्रकार की संधि के कुछ उदाहरण नीचे दिए हैं:

सदा + एव = सदैव (हमेशा)

तस्य + एतत् = तस्यैतत् (चित्रम्) उसका यह (चित्र)

तव + एषा = तवैषा (माला) तुम्हारी यह (माला)

10.7 अ. नीचे दिए शब्द युग्मों में संधि कीजिए:

बालिका	**+**	**इयम्**	=	(यह लड़की)
न	**+**	**इच्छामि**	=	(मैं नहीं चाहता)
सा	**+**	**उपविशति**	=	(वह बैठती है)
सदा	**+**	**एव**	=	(हमेशा)
तस्य	**+**	**उदरम्**	=	(उसका पेट)

न	+	**एनम्**	=	(इसे नहीं)
सर्व	+	**ईश्वरः**	=	(सबका स्वामी)
तस्य	+	**उपरि**	=	(उसके ऊपर)
महा	+	**ईश्वरः**	=	(शिव)
तस्य	+	**एतानि**	=	(उसकी ये-चीज़)

10.8 प. वार्तालाप

1. **रमेशः**— अपि एतत् भवत्याः गृहम्?
2. **सरला**— आम्, एतत् मम गृहम्।
3. **रमेशः** — भवत्याः गृहे के के सन्ति?
4. **सरला**— मम गृहे अधुना मम माता च भ्राता च स्तः।
5. **रमेशः** — भवत्याः भ्राता किं करोति?
6. **सरला**— सः महाविद्यालये पठति।
7. **रमेशः** — तस्य महाविद्यालयः कुत्र अस्ति?
8. **सरला**— तस्य महाविद्यालयः नगरे अस्ति।
9. **रमेशः** — सः तत्र किं पठति?
10. **सरला**— सः तत्र इतिहासम् आंग्लभाषां च पठति।
11. **रमेशः** — भवत्याः माता गृहे किं करोति?
12. **सरला**— सा अस्मभ्यं सर्वेभ्यः भोजनं पचति।
13. **रमेशः** — किं भवती अपि भोजनं पचति?
14. **सरला**— आम्, अवकाशस्य दिने अहमपि भोजनं पचामि। विद्यालयस्य दिनेषु एतत् न संभवति।
15. **रमेशः** — भवत्याः पिता अधुना कुत्र अस्ति?
16. **सरला**— सः अधुना जापानदेशे अस्ति।
17. **रमेशः** — अपि सः भवतीं पत्रणि लिखति?
18. **सरला**— सः सप्ताहे एकवारम् अवश्यं पत्रं लिखति। मम पिता मयि अति स्निह्यति। अहमपि तं पत्रणि लिखामि। भवतः पिता किं करोति?
19. **रमेशः** — मम पिता सर्वकारस्य कार्यालये अधिकारी अस्ति। सः अधुना कार्यालयात् आगच्छति। अहं तं गृहे मिलामि।

नमस्ते।

20. सरला— नमस्ते।

10.9 प. आइए, अब हम संस्कृत के दो श्लोक पढ़ें:

क. पुण्यस्य फलमिच्छन्ति पुण्यं नेच्छन्ति[1] मानवा:।
फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति सर्वदा[2]॥

ख. नमन्ति[3] फलिनो[4] वृक्षा: नमन्ति गुणिनो[5] जना:।
शुष्का[6] वृक्षाश्च मूर्खाश्च[7] न नमन्ति कदाचन[8]॥

(**शब्दार्थ:**—1. नहीं चाहते, 2. हमेशा, 3. **नम्**- झुकना, नम्र होना; 4. **फलिन् का**- फलिन् का 1.3 (फलवाले) 5. **गुणिन:** -गुणिन् का 1-3 (अच्छे गुणों वाले), 6. **शुष्क (वि.)** सूखा, 7. **मूर्ख:** मूर्ख व्यक्ति, 8. **न कदाचन**- कभी नहीं)

आइए अब हम एक सूक्ति पढ़े:

ग. मनस्वी[1] कार्यार्थी[2] न गणयति[3] दु:खं न च सुखम्।

(**शब्दार्थ:**- 1. मननशील, बुध्दिमान, 2. दृढ़ निश्चयी, कार्य पूर्ण करने में दृढ़ संकल्प, 3. परवाह करता है)

10.10 अ. नीचे दिए वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए:

1. तुम्हारे पिता जी इस बारे में[1] क्या कहते हैं? 2. लड़कियों, तुम इस समय क्या कर रही हो? 3. हम सब गीता के श्लोक याद कर रही हैं। 4. हम प्रतिदिन देवता[2] की पूजा करते हैं। 5. वे बाग के सभी पेड़ों को गिन रहे हैं। 6. मैं आज अपने सब मैले[3] कपड़े धो रहा हूँ।

(**शब्दार्थ:**— इस बारे में- अस्मिन् विषये; **देवं** (पु-) **देवीम्** (स्त्री-) 3. मलिनानि)

अभ्यासों के उत्तर

10.2 1. वह लड़का हाथ से गेंद फेंक रहा है। 2. वे लड़कियाँ पानी से पौधों को सींच रही हैं। 3. कक्षा में विद्यार्थी प्रश्न पूछ रहे हैं। 4. हम आज उन्हें पत्र लिख रहे हैं। 5. क्या, आप भी पत्र लिख रहे हैं। 6. नहीं, हम पत्र नहीं लिख रहे हैं, पुस्तक पढ़ रहे हैं। 7. तुम क्या चाहते हो? 8. मैं सुख चाहता हूँ, दु:ख नहीं चाहता। 9. संसार के लोग केवल सुख चाहते हैं, दु:ख नहीं चाहते। 10. ईश्वर इस संसार की रचना करता है।

10.4 1. लोग मन्दिर में फूलों से देवताओं की पूजा करते हैं। 2. विद्यार्थी अध्यापक की आज्ञा मानते हैं। 3. हम मीठे फल खा रहे हैं। 4. वह मैले कपड़े धो रही है। 5. चोर गहने चुराते हैं। 6. शासक लोग उन सब को दण्ड देते हैं। 7. तुम किस विषय में सोच रहे हो? 8. मैं देश की दशा के बारे में सोच रहा हूँ। 9. वे शहर के लोगों की गणना कर रहे हैं। 10. पंडित जी

रामायण की सुन्दर कथा सुना रहे हैं। 11. लड़कियाँ फूलों से अपने बालों को सजा रही हैं। 12. वे इन फूलों से माला बना रही हैं।

10.7 1. बालिकेयम्, 2. नेच्छामि, 3. सोपविशति, 4. सदैव, 5. तस्योदरम्, 6. नैनम्, 7. सर्वेश्वरः, 8. तस्योपरि, 9. महेश्वरः, 10. तस्यैतानि-

10.8 1. क्या यह आपका घर है? 2. हाँ, यह मेरा घर है। 3. आपके घर में कौन कौन है? 4. मेरे घर में इस समय मेरी माताजी और भाई हैं। 5. आपका भाई क्या करता है? 6. वह कॉलेज में पढ़ता है। 7. उसका महाविद्यालय कहाँ है? 8. उसका महाविद्यालय शहर में है। 9. वह वहाँ क्या पढ़ता है? 10. वह वहाँ इतिहास और अंग्रेज़ी पढ़ता है। 11. आपकी माता जी घर में क्या करती है? 12. वे हम सबके लिए भोजन पकाती है। 13. क्या आप भी भोजन पकाती हैं? 14. हाँ, छुट्टी के दिन मैं भी भोजन पकाती हूँ, विद्यालय के दिनों में यह सभंव नहीं होता। 15. विद्यालय के दिनों में यह संभव नहीं होता। 15. आपके पिता जी अब कहाँ हैं? 16. वे आजकल जापान में हैं। 17. क्या वे आपको पत्र लिखते हैं? 18. हाँ, वे सप्ताह में एकबार अवश्य पत्र लिखते हैं। मेरे पिता जी मुझसे बहुत प्यार करते हैं। मैं भी उन्हें पत्र लिखती हूँ। आपके पिताजी क्या करते हैं? 19. मेरे पिताजी सरकारी कार्यालय में अधिकारी हैं। वे इस समय कार्यालय से आते हैं। मैं उन्हें घर पर मिलता हूँ। नमस्ते। 20. नमस्ते।

10.9 (क) मनुष्य पुण्य (अच्छे कर्मों) का फल चाहते हैं परन्तु पुण्य (अच्छे कर्म) करना नहीं चाहते। वे पाप (बुरे कर्मों) का फल नहीं चाहते परन्तु हमेशा पाप (बुरे कर्म) करते हैं।

(ख) फलवाले पेड़ झुके रहते हैं। गुणी लोग हमेशा नम्र होते हैं। सूखे पेड़ और मूर्ख लोग कभी नहीं झुकते।

(ग) कार्य की सिध्दि चाहने वाला, विचारशील व्यक्ति दुःख या सुख की परवाह नहीं करता।

10.10 1. तव पिता अस्मिन् विषये किं कथयति? 2. भोः बालिकाः, यूयमधुना किं कुरुथ? 3. वयं सर्वाः गीतायाः श्लोकान् स्मरामः। 4. वयं प्रतिदिनं देवं पूजयामः। 5. ते वाटिकायाः सर्वान् वृक्षान् गणयन्ति। 6. अहम् अद्य मम सर्वाणि मलिनानि वस्त्रणि क्षालयामि।